Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 5 | ISSUE : 7 | JULY 2019

वैश्वीकरण का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

संजीव कुमार प्रभाकर [1]

[1] *शोध छात्र (वाणिज्य), ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा ग्राम- बुंदेलखंड, पो- बासोपट्टी भाया-बासोपट्टी, जिला-मधुबनी (बिहार)* 847225.

ABSTRACT:

KEYWORDS:

प्रस्तावना :- वैश्वीकरण अर्थात भूमंडलीकरण को अंग्रेजी में "Globlisation" कहा जाता है| जिसका अभिप्राय विश्व के विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था को एक सूत्र में बांधना| इसके अंतर्गत किसी भी व्यापार तकनीक एवं अन्य सेवाओं को पूरी दुनिया के विश्व बाजार में विस्तार करना है| अर्थात किसी भी एक देश का दूसरे देशों के साथ किसी वस्तु, सेवा, पूंजी, विचार एवं वौधिक संपदा का अप्रतिबंधित लेनदेन ही ग्लोबलाइजेशन कहलाता है| यह न केवल आर्थिक क्षेत्र तक ही सीमित है बल्कि राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी विद्यमान है

परिचय :- यूरोपीय देशों में लगभग 16 वीं सदी में जब साम्राज्यवाद का उदय हुआ उसी समय से वैश्वीकरण की शुरुआत मानी जाती है लेकिन वास्तव में वैश्वीकरण की प्रक्रिया आधुनिक युग की देन है जो इंग्लैंड के औद्योगिक क्रांति के पश्चात तीव्र हुई|18 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा19 वीं शताब्दी के प्रारंभ में इंग्लैंड में औद्योगिक क्षेत्र में आमूल परिवर्तन हुयें जिसका प्रभाव यूरोप के अन्य देशों में भी फैल गया जैसा कि हम सभी जानते हैं कि 1914 से 1945 के बीच विश्व को दो भयंकर युधों का सामना करना पड़ा जिस कारण विभिन्न देशों की उत्पादन एवं आर्थिक प्रणाली क्षतिग्रस्त एवं कमजोर हो गई थी और अंतरराष्ट्रीय व्यापार क्षेत्र संकुचित हो गया था फलस्वरूप इस विश्व व्यापार को पुनर्स्थापित करने के लिए वैश्वीकरण अपनाने पर ज्यादा जोर दिया गया जिसका प्रभाव यह हुआ कि धीरे-धीरे विभिन्न देशों के राजनीतिज्ञ एवं अर्थशास्त्रियों ने वैश्वीकरण के उपयोगिता को समझने लगा परिणाम यह हुआ कि एक के बाद एक सभी देशों ने धीरे-धीरे वैश्वीकरण को अपनाना प्रारंभ कर दिया आधुनिक समय में सूचना एवं संचार क्रांति के कारण तो पूरी दुनिया एक गांव हो गई है इस प्रक्रिया को अंजाम तक पहुंचाने में विभिन्न वैश्विक संस्था है यथा विश्व बैंक 1944, विश्व व्यापार संगठन 1995, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष 1944, आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाया|

वैश्वीकरण के कारण विगत वर्षों में विश्व स्तर पर व्यापार का विस्तार हुआ है आवागमन पर किसी प्रकार का प्रतिबंध न होने से विश्व के सकल उत्पाद में 3 गुना वृद्धि हुई है बहुराष्ट्रीय निगम ने वैश्वीकरण के कारण ही विश्व उत्पाद को आपस में जोड़ने का कार्य किया है सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तकनीकी ने तो वैश्वीकरण की उपयोगिता को और बढ़ा दिया है जिसका स्पष्ट उदाहरण मोबाइल, लैपटॉप, कंप्यूटर एवं इंटरनेट आदि है|

- ❖ <u>वैश्वीकरण नीति का मुख्य अंग</u>
  - ➢ पूंजी का मुक्त प्रवाह
  - ➢ श्रम एवं मानव संसाधनों कि मुक्त गतिशीलता
  - ➢ प्रौद्योगिकी का मुक्त प्रवाह
  - ➢ स्वतंत्र व्यापार नीति
- ❖ <u>वैश्वीकरण को प्रोत्साहित करने वाला कारक</u>
  - ➢ परिवहन प्रौद्योगिकी
  - ➢ सूचना प्रौद्योगिकी
  - ➢ संचार प्रौद्योगिकी, आदि|
- ❖ <u>वैश्वीकरण की प्रमुख विशेषताएं</u>
  - ➢ नवीन सूचना तकनीकी
  - ➢ श्रम का वैश्वीकरण
  - ➢ बहुराष्ट्रीय कंपनी का विस्तार
  - ➢ आर्थिक क्रियाओं का अंतरराष्ट्रीय सीमा तक विस्तार
  - ➢ बाजारों का एकीकरण
  - ➢ वैश्विक राष्ट्र राज्य
  - ➢ बहू-संस्कृति बाद

- व्यापारी का अंतरराष्ट्रीयकरण

वैश्वीकरण का भारत पर प्रभाव

भारत जैसे विकासशील देशों में वैश्वीकरण की नीति1991 ईस्वी में आर्थिक सुधार करने के नियत से शुरू की गई जिसमें व्यापार संबंधी बाधाओं को हटाकर भारत की अर्थव्यवस्था को विश्व के लिए खोला गया एवं इनके तीन अवयवों को अपनाया गया वैश्वीकरण, उदारीकरण, एवं निजी करण |

अर्थव्यवस्था के विकास दर को बढ़ाना, अतीत में प्राप्त लाभों का समायोजन करना एवं उत्पादन इकाइयों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को बढ़ाना इसका मुख्य उद्देश्य रहा है वैश्वीकरण के कारण देश में व्याप्त आर्थिक असमानता धीरे-धीरे कम हो जाने लगा इनका प्रभाव यह हुआ1980-91 में औद्योगिक विकास दर 4.3% के आसपास था जो2017-18 में लगभग 8.5% हो गया| बचत का दर भी बढ़ने लगा एवं अर्थव्यवस्था का विकास तीव्र गति से होने लगा यहां के बाजारों में विदेशी कंपनियों द्वारा निर्मित विभिन्न सामान यथा :- मोटर गाड़ी, सेलफोन, इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद, सिले-सिलाए कपड़े, सौंदर्य प्रसाधन संबंधी उत्पाद, जूते तथा अन्य कई प्रकार के उपभोक्ता वस्तुएं उपलब्ध होने लगी साथ ही पर्यटन को भी बढ़ावा मिलने लगा|

अतः कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण का भारत में जो प्रभाव पड़ा हुआ निम्न है

- ✓ प्रौद्योगिकी का विकास :- वैश्वीकरण के कारण भारत में भी नए-नए टेक्नोलॉजी का प्रयोग होने लगा है जिसका परिणाम यह हुआ कि इससे समय एवं श्रम का बचत होने लगा|
- ✓ पूंजी की बेहतर गतिशीलता- वैश्वीकरण के कारण पूंजी प्रवाह आसान हो गया है फलस्वरूप फ़ॉर्मों को वित प्राप्त करने की क्षमता में वृद्धि हुई है|
- ✓ बहुराष्ट्रीय कंपनियों का उदय :- भारत में अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियां यथा हौंडा, पेप्सी, कोका-कोला, फ्लिपकार्ट एवं नोकिया आदि का प्रादुर्भाव हुआहै जिससे यहां के लोगों को फायदा हुआ है|
- ✓ उपभोक्ताओं के लिए अधिक विकल्प वैश्वीकरण का प्रभाव भारत में ऐसा पड़ा है कि भारतीय उपभोक्ता को भी उत्पाद की वस्तुओं को चुन सकता है
- ✓ उच्च आय :- वैश्वीकरण के कारण रोजगार का सृजन होना शुरू हुआ इससे लोगों को अधिक से अधिक रोजगार मिलने लगा फलस्वरूप लोगों की आमदनी बढ़ने लगी|
- ✓ कृषि क्षेत्र का विकास :- वैश्वीकरण के कारण भारत में नईई कृषि तकनीकी से फसलों का पैदावार होना शुरू हो गयाफलतः उत्पादन में अप्रत्याशित वृद्धि होने लगा
- ✓ संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग- संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग होने लगा|
- ✓ निर्यात में वृद्धि :- वैश्वीकरण के कारणभारत के विभिन्न उत्पादों के निर्यातों मेंअप्रत्याशित वृद्धि हुई जैसे कपड़ा, चाय, उर्वरक, आदि|
- ✓ मध्यम वर्ग का उदय :- वैश्वीकरण के कारण भारतीय समाज में दबे कुचले मध्यम वर्ग का उदय हुआ|
- ✓ नई तकनीकी का प्रचलन :- वैश्वीकरण के कारण भारत में भी विभिन्न क्षेत्रों में नईई तकनीकी का प्रचलन होने लगा जिसका परिणाम श्रम व समय का बचत है|
- ✓ नए नए उद्योग धंधोंका विकास :- वैश्वीकरण के कारण बड़े बड़े उद्योग शुरू करने संबंधी कठिनाइयां दूर हो गई बड़ी-बड़ी मशीनों का खरीदना आसान हो गया जैसेरियरटेल, एचडीएफसी, फ्लिपकार्ड, पेटीएम इत्यादि कंपनियां अस्तित्व में आयी|
- ✓ शिक्षा में वृद्धि :- देश में उच्च शिक्षा का विकासहुआ| नए-नए संस्थान खोले गए घर बैठे लोग इंटरनेट के माध्यम से अधिक से अधिक एवं कठिन से कठिन शिक्षा प्राप्त करने लगे|
- ✓ डिजिटल लेनदेन :- भारत में डिजिटल लेनदेन वैश्वीकरण का ही प्रभाव है|
- ✓ सोशल मीडिया :- वैश्वीकरण के कारण भारत में सोशल मीडिया के क्षेत्र में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है जैसे व्हाट्सएप, फेसबुक एवं ट्विटर इत्यादि|
- ✓ ई-कॉमर्स :- वैश्वीकरण के कारण भारत में ई कॉमर्स को बढ़ावा मिला है|

निष्कर्ष :- उपरोक्त सभी पहलुओं का अध्ययन के उपरांत कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण एक सतत बहुआयामी एवं बहुमुखीप्रक्रिया है जिसमें विश्व के विभिन्न अर्थव्यवस्था को एक साथ जोड़ा जाता है अर्थात उत्पादन के साधनों एवं उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के प्रवाह पर कोई प्रतिबंध नहीं रहता है वैश्वीकरण के कारण आज पुरा विश्व एक गांव बन गया हैं वैसे तो वैश्वीकरण काप्रदुर्भाव आर्थिक एवं व्यापारिक क्षेत्र से ही शुरू हुआ लेकिन वास्तव में वैश्वीकरण आर्थिक , सामाजिक राजनीतिक , पर्यावरणिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र से भी है जहां तक वैश्वीकरणका भारत में प्रभाव की बात है तो भारत का कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं है आज वैश्वीकरण के कारण भारत में व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य, वित्, संचार एवं सूचना सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है लेकिन यह सब सकारात्मक परिवर्तन है लेकिन भारत के सभ्यता एवं संस्कृति पर नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिल रहा है|

अतः कहा जा सकता है कि वैश्वीकरणएक बहुमुखी, बहुआयामी एवं सतत धारणा है जिसका प्रभाव समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंधों पर पड़ता है वैश्वीकरण ने भौगोलिक सीमाएं एवं अन्य सभी सीमाओं का उन्मूलन कर समाज को "वासुदेव कुटुंबकम" की ओर अग्रसर किया है|

संदर्भ :-

1. दोषी, एस . एल . आधुनिकता , उत्तर आधुनिकता एवं नव समाजशास्त्रीय सिद्धांत, रावत प्रकाशन जयपुर (2002)
2. गर्ग, आनंद स्वरूप(2000) अर्थशास्त्र, साहित्य भवन प्रकाशन आगरा |
3. भारती भवन प्रकाशन एवं वितरण, पटना (2015)
4. समय एवं संस्कृति - श्याम चरण दुबे (2008)
5. योजना (2008)